शिक्षकों का अनुभव लेखन
शिक्षक–शिक्षा में जगह और सम्भावनाएँ

अमित कोहली

आजकल शिक्षकों के प्रोफ़ेशनल डेवलपमेंट की काफ़ी बातें होने लगी हैं और प्रयास भी खूब हो रहे हैं। लेकिन दृष्टि निर्माण और क्षमतावर्धन के लिए जो पठन सामग्री शिक्षक प्रशिक्षणों में या अन्य तरह से इस्तेमाल की जाती है उससे कई बार शिक्षकों का कोई जुड़ाव नहीं बन पाता। ऐसे में यदि शिक्षक साथियों का अनुभव लेखन, बतौर पठन सामग्री उपलब्ध हो तो वह ज़्यादा कारगर हो सकता है। अनुभव लेखन, शिक्षक को अपने काम को अभिव्यक्त करने की क्षमता और अवसर तो देता ही है साथी शिक्षकों को दृष्टि देने, प्रेरित करने और विषयवस्तु से सीधा जुड़ाव बनाने में मददगार हो सकता है। अनुभव लेखन भी शिक्षकों के प्रोफ़ेशनल डेवलपमेंट का एक अभिन्न हिस्सा होना चाहिए। अमित कोहली ने इस आलेख के माध्यम से शिक्षकों के अनुभव लेखन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की है। सं.

शिक्षक प्रशिक्षणों में जो पठन सामग्री इस्तेमाल होती है, वह अधिकांशतया 'किसी और' की लिखी गई होती है। यह 'कोई और' अकसर दूर देश का कोई विशेषज्ञ, विद्वान होता / होती है। उनके लिखे का सन्दर्भ, प्रसंग, उदाहरण आदि भी आमतौर पर शिक्षकों को दूर का और शायद इसीलिए पराया प्रतीत होता है। इस वजह से पठन सामग्री और प्रशिक्षु शिक्षक के बीच सहज तादात्म्य बनना बहुधा मुश्किल हो जाता है।

शिक्षक प्रशिक्षक भी इस विकट वस्तुस्थिति से अनजान नहीं होते हैं, पर विषय के अनुरूप सामग्री चयन के वक़्त वे पाते हैं कि स्थानीय परिवेश में शिक्षकों के प्रत्यक्ष अनुभव से उपजी लिखित सामग्री का नितान्त अभाव है। इसलिए उनकी मजबूरी हो जाती है कि उपलब्ध विकल्पों में से ही पठन सामग्री का चयन कर काम चलाया जाए।

इस क्रम में अनुवाद एक बहुआयामी चुनौती है। विदेशी सामग्री चूँकि अधिकांशतया अँग्रेज़ी में होती है, उसे समझना प्रादेशिक भाषा माध्यम में पढ़ाने वाले प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के शिक्षकों के लिए आमतौर पर टेढ़ी खीर होता है। ज़ाहिर है, इन हालात में मूल सामग्री का अनुवाद कराया जाना लाज़िमी हो जाता है। यहाँ पहली चुनौती प्रादेशिक भाषा में गुणवत्तापूर्ण और सहज प्रवाहमय भाषा में अनुवाद करने वाले व्यक्तियों की खोज करना होता है। फिर उनका समय मिलना भी आसान नहीं, क्योंकि अच्छे अनुवादकों की माँग बहुत है। फिर भी कई बार देखा जाता है कि कुछ मौक़ों पर अनुवाद मूल पाठ से दूर जाता हुआ नज़र आता है। इसलिए पाठकों को अर्थनिर्माण में मुश्किल होती है। वैसे भी हम सभी जानते हैं कि प्रत्येक भाषा अपने साथ एक सांस्कृतिक परिवेश लेकर चलती है। किसी कथन का शाब्दिक अनुवाद तो आसानी से किया जा सकता है, लेकिन कथन में जो निहितार्थ होते हैं, अनकही परतें होती हैं और उसकी जो स्थानीयता है, उसे अनूदित नहीं किया जा सकता। ये तो जज़्ब करने की चीज़ें हैं, जो सिर्फ़ भाषा को जज़्ब करने भर से नहीं हो जाता है।

अनुभवात्मक लेखन के आयाम

इन तमाम मुश्किलों से प्रशिक्षक और प्रशिक्षु दोनों को दो-चार होना पड़ता है। ऐसे में स्थानीय लेखन की कमी बेहद खलती है। अगर शिक्षक ख़ुद अपने अनुभव लिखना शुरू करें तो इस कमी को काफ़ी हद तक पूरा किया जा सकता है। योग्य प्रशिक्षक थोड़ी मेहनत करें तो शिक्षकों के अनुभवात्मक लेखन को शिक्षा-सिद्धान्तों के बरअक्स रखकर पेश कर सकता / सकती है। या फिर प्रादेशिक भाषाओं में जो सैद्धान्तिक लेखन है– ज़ाहिर है कि वह अपेक्षाकृत कठिन और अमूर्त होता है– उसे समझाने के लिए शिक्षकों के अनुभवात्मक लेखन का उदाहरण, प्रयोग या व्यावहारिक पक्ष के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। इस रूप में सैद्धान्तिक अमूर्त लेखन और शिक्षकों का अनुभवात्मक लेखन परस्पर पूरक के रूप में शिक्षक प्रशिक्षण के उपयोगी माध्यम हो सकते हैं।

शिक्षकों का अनुभवात्मक लेखन सैद्धान्तिक अवधारणाओं को समझने में मदद करने वाली मानवीय अनुभवों की वह दृष्टि प्रदान करता है जो निजी या सामाजिक अन्तर्क्रियाओं से उपजी होती है।

अनुभव लेखन के तीन आयाम होते हैं– व्यावहारिकता, सामाजिकता और स्थानीयता। ये तीन आयाम अनुभवात्मक लेखन में परस्पर गुँथे हुए होते हैं और उनकी यही विशेषता उन्हें अन्य अकादमिक लेखनों से अलग करती है।[1]

अनुभवात्मक लेखन की व्यावहारिकता उसका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आयाम है क्योंकि वे शिक्षक द्वारा जीए गए जीवन का हिस्सा होते हैं। इसलिए ये हमें अमूर्तता के अबूझ-से संजाल में उलझा देने के बदले सांसारिक मूर्तता का अनुभव कराते हैं। चूँकि ये जीये गए अनुभव होते हैं, उनमें सामाजिक और स्थानीय अन्तर्क्रिया स्वाभाविक रूप से जुड़ी हुई होती है। इस रूप में अनुभवात्मक लेखन शिक्षक प्रशिक्षणों के दौरान मूर्तता से अमूर्तता की ओर ले जाने वाली एक सुलभ सीढ़ी का काम कर सकते हैं।

अनुभव लेखन की उपयोगिता

प्रशिक्षण के दौरान या बाद में, इस प्रकार के अनुभवात्मक लेखन पर मनन करते हुए शिक्षकों के समक्ष नई आशाओं, नई सम्भावनाओं और नई अपेक्षाओं का विश्व भी खुलता है। इन्हें तीन दृष्टिकोणों से पढ़ा जा सकता है– पहला है, सैद्धान्तिक अन्तर्दृष्टि लिए हुए लेखक-शिक्षक के अनुभव जो पाठक-शिक्षक को आशा प्रदान करते हैं। दूसरा है, अपने काम और अनुभवों की प्रतिध्वनि, जिसमें पाठक-शिक्षक अपने-आप की छवि उस लेखन में देख सकता / सकती है। तीसरा दृष्टिकोण है, सम्भावनाओं के द्वार। इन तीनों दृष्टिकोणों के साथ शिक्षकों के अनुभव लेखन का उपयोग किया जा सकता है। इनको पढ़ते हुए पाठक-शिक्षक यह महसूस करने लगते हैं, "जो अब तक मैंने नहीं किया है, वह किया जा सकता है।" इस प्रकार अनुभवात्मक लेखन शिक्षकों के उत्तरोत्तर विकास का एक रास्ता बनाते हुए भी नज़र आते हैं।[2]

ज्ञान निर्माण का आधार

ऐनी लॉरा फ़ोर्साइथ मूर अपने एक आलेख[3] में कहती हैं, "निजी और पेशागत अनुभव लेखन हमें 'ज्ञान के ढाँचे' प्रदान करते हैं, जिनमें हम ज्ञान-निर्माण और अर्थ-निर्माण करते हैं।" इस तरह, अनुभव लेखन लेखक-शिक्षक को भी अपने अनुभवों पर मनन करने और अपने अनुभवों को 'ज्ञान' के रूप में देखने की प्रेरणा देते हैं और इस तरह उन्हें एक बेहतर शिक्षक बनने में मदद करते हैं। वे आगे कहती हैं, "लेखन के मेरे अभ्यास ने निजी ज्ञान का रूप ले लिया है जिसे मैं एक शिक्षक के रूप में अपने पेशागत कार्यों में इस्तेमाल कर सकती हूँ।"[4]

---

1. कॉनोली व क्लैंडिनिन, *हैण्डबुक ऑफ़ कॉम्प्लिमेंटरी मैथड्स इन एजुकेशन रिसर्च, 2006।*

2. मैक्सिन ग्रीन, *फ़्रॉम बेअर फ़ैक्ट्स टू इंटेलेक्चुअल पॉसिबिलिटी : द लीप ऑफ़ इमैजिनेशन, 2008।*

3. मूर,एनी, *नैरेटिव्स ऑन टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन; नैरेटिव फ़्रेमवर्क्स ऑफ़ लिविंग, लर्निंग, रिसर्चिंग, एंड टीचिंग* (सम्पादन - ऐंड्रिया, एम.ए. मैटोस) 2009

4. वही

सिद्धान्त और व्यवहार के बीच संवाद

हम जानते हैं कि सीखना-सिखाना किसी सामाजिक परिवेश में घटित होता है, जो अपने-आप में जटिल संरचना है।[5] शिक्षकों के अनुभव उस जटिलता को व्यक्त करने और स्पष्ट करने का एक सशक्त माध्यम हो सकते हैं। ये अनुभव शिक्षण-कर्म के सिद्धान्तों और वास्तविक कक्षा में सिखाने की मूर्त प्रक्रिया के बीच समझ का विकास करने में सहायक होते हैं।

शिक्षक शिक्षा में अकसर सिद्धान्तों को लागू करने की पद्धति पर ज़ोर दिया जाता है। अकादमिक पुस्तकों में शिक्षा जगत के विद्वानों ने जो सिद्धान्त बताए हैं, उन्हें पाठ्यक्रम में लागू करते हुए कक्षा संचालन करना, इसे नवाचारी शिक्षा पद्धति समझने की भूल की जा सकती है।

हम जानते हैं कि परम्परागत रूप से शिक्षा महाविद्यालयों में सिद्धान्तों पर अधिक ज़ोर दिया जाता रहा है। जबकि दूसरी ओर स्कूल की संस्कृति व्यावहारिक अनुभवों और कठोर वास्तविकताओं से भरी होती है, जिसका प्रत्यक्ष रिश्ता अकादमिक सिद्धान्तों से बिरले ही नज़र आता है। नए शिक्षक जब कक्षा में पहुँचते हैं तो वे सिद्धान्तों को कक्षा में लागू करने का दबाव लेकर आते हैं, परिणामस्वरूप व्यावहारिक और सैद्धान्तिक पक्ष के द्वन्द्व में उनके उलझ जाने की प्रबल सम्भावना होती है। ऐसी उलझन से बचने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों के अनुभवों का पठन-पाठन किया जाना निहायत ज़रूरी जान पड़ता है, ताकि जब नए शिक्षक पहले-पहल कक्षा में क़दम रखें तो अन्य शिक्षकों के द्वारा अर्जित किए गए अनुभवों का ज्ञान उनके साथ हो।

अनुभव लेखन के प्रकार

शिक्षकों के अनुभव लेखन को हम मोटेतौर पर चार श्रेणियों में बाँट सकते हैं। यद्यपि अधिकांश लेखनों में ये चारों, या इनमें से दो या तीन श्रेणियाँ परस्पर इस तरह गुँथी हुई हो सकती हैं कि उनकी अलग पहचान करना मुश्किल हो। दरअसल इन श्रेणियों को अलग-अलग खाँचों में रखकर देखने की ज़रूरत भी नहीं है। बस हमें यह समझने की ज़रूरत है कि अनुभव लेखन में कौन-कौन से तत्त्व हैं, कौन-कौन-सी ख़ासियतें हैं, ताकि उनका इस्तेमाल हम सही मौक़ों पर कर सकें।

(1) वर्णनात्मक – किसी कक्षा में गणित का पीरियड है और शिक्षिका बच्चों को भाग करना, सम-विभाजन करना सिखा रही है। वह विद्यार्थियों के समक्ष कोई प्रश्न रखती है जैसे— अपनी कक्षा में 42 विद्यार्थी और 7 गेंदें हैं। तो प्रत्येक गेंद से खेलने के लिए बराबर-बराबर संख्या में विद्यार्थियों के कितने समूह बन सकते हैं?

फिर विद्यार्थी उसपर चर्चा करते हैं, सोचते हैं, सवाल करते हैं, शिक्षिका चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों से ही प्रतिप्रश्न करती है, विद्यार्थी आपस में चर्चा करते हैं। हो सकता है कि शिक्षिका कक्षा में सात गेंद लेकर आए और सम-विभाजन की प्रत्यक्ष गतिविधि कराए। इस गतिविधि के बाद फिर चर्चा हो, किसी संख्या को किन्हीं बराबर हिस्सों में बाँटने के अन्य सवालों पर चर्चा हो। इस क्रम में शिक्षिका भागफल निकालने की कलन विधि तक विद्यार्थियों को पहुँचने में मदद करे...।

यह एक उदाहरण मात्र है, इस तरह प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर किसी चर्चा या गतिविधि का वर्णन लिखा जाए तो उसे हम वर्णनात्मक लेखन कह सकते हैं। इसे शिक्षिका दृष्टा भाव से लिखती है। जो हुआ, जैसे हुआ, उसे दर्ज कर लिया। मानो कक्षा में क़ैमरा घूम रहा है और जो घटित होते जा रहा है, वह रिकॉर्ड किया जा रहा है।

इस प्रकार के लेखन में चर्चा या गतिविधि की जितनी ज़्यादा तफ़सील दर्ज होगी, लेखन की उपयोगिता उतनी ही अधिक होगी। क्योंकि इससे पाठक को कक्षा में मौजूद होने का

5. लेव वायगोत्स्की; *माइंड इन सोसायटी : द डेवलपमेंट ऑफ़ हायर सायकोलॉजिकल प्रोसेस।*

अहसास मिलेगा और वो हर छोटी-से-छोटी बात, जो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण हो सकती है, पर ग़ौर कर सकेगा / सकेगी। वर्णनात्मक अनुभव लेखन में पाठकों को अपेक्षाकृत अधिक आज़ादी मिलती है कि वे कक्षा में घटित हुई चर्चा या गतिविधि की व्याख्या कर सकें और उसका अर्थ या बोध निर्माण स्वतंत्र रूप से स्वयं कर सकें।

(2) **मननात्मक** – ऊपर उल्लेखित अनुभव की भीतर की परतों में जाकर देखते हैं। मान लो कि उक्त शिक्षिका अपनी लेखन शैली में बदलाव करके अनुभव लेखन में यह दर्ज करती है– कक्षा में चर्चा के जो विषय या प्रश्नों का जो क्रम है, वो उसी क्रम से रखना उन्होंने ज़रूरी क्यों समझा? क्या सोचकर गेंद वाली गतिविधि का नियोजन किया? बातचीत के दौरान शिक्षिका के मन में क्या चल रहा था? बच्चों के मन में क्या चल रहा होगा? इस गतिविधि से क्या हासिल हुआ? फलाँ गतिविधि करने की कक्षा में क्या और क्यों उपयोगिता रही? वग़ैरह। अगर गतिविधि की तफ़सील के साथ इन जैसे सवालों पर शिक्षिका अपना चिन्तन, अपने विचार भी अनुभव लेखन में दर्ज करती है तो हम इसे मननात्मक अनुभव लेखन की श्रेणी में रख सकते हैं।

> लेखन में चर्चा या गतिविधि की जितनी ज़्यादा तफ़सील दर्ज होगी, लेखन की उपयोगिता उतनी ही अधिक होगी। क्योंकि इससे पाठक को कक्षा में मौजूद होने का अहसास मिलेगा और वो हर छोटी-से-छोटी बात, जो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण हो सकती है, पर ग़ौर कर सकेगा / सकेगी।

इस लेखन से पाठक को सिर्फ़ वर्णन ही नहीं, लेखक-शिक्षक के विचार भी मिलते हैं। यानी कक्षा में क़ैमरा घूमकर सिर्फ़ दृश्य ही नहीं रिकॉर्ड कर रहा, बल्कि कोई कमेंट्री भी कर रहा है।

इसका फ़ायदा यह है कि लेखक-शिक्षक कक्षा में घटित उस गतिविधि के औचित्य को, योजना को, हासिल को और अपनी समझ को पाठक-शिक्षक के समक्ष प्रस्तुत कर पाता है। इसमें गतिविधि करा रहे शिक्षक को अपनी एजेंसी, अपना मत और अपना व्यक्तित्व भी साझा करने का मौक़ा मिलता है। इससे गतिविधि का समग्र स्वरूप समझ पाने में मदद मिल सकती है। लेकिन कभी-कभी यह पाठक-शिक्षक के लिए बाधा भी बन सकता है क्योंकि इससे व्याख्या करने और बोध निर्माण करने की उसकी स्वतंत्रता सीमित होने की सम्भावना रहती है।

(3) **समस्या चिह्नांकन** – कोई शिक्षिका यदि यह चिह्नित करे कि कक्षा 3 और 4 के विद्यार्थियों को भागफल निकालने की कलन विधि समझने में कठिनाई होती है। यह कठिनाई सिर्फ़ उसकी कक्षा की नहीं, बल्कि अन्य शालाओं की, अन्य ज़िलों, प्रदेशों में भी विद्यार्थियों को होती होगी। तो वह अपनी कक्षा में हुई बातचीत, सवाल-जवाब, विद्यार्थियों के दिए हुए ग़लत जवाब आदि को तफ़सील में दर्ज करके भागफल निकालने की कलन विधि में आने वाली समस्या को प्राथमिक कक्षाओं में गणित शिक्षण की एक व्यापक समस्या के रूप में चिह्नित करके लिखती है। इसे हम समस्या चिह्नित करना कहेंगे।

इसमें यह ज़रूरी है कि समस्या तो हम एक ही– जैसे, भागफल की कलन विधि– चिह्नित करें तो बेहतर है। लेकिन शिक्षिका के अपने प्रयास और विद्यार्थियों के प्रतिसाद को जितने विस्तार से लिखा जाए, उतना ही फ़ायदेमन्द यह लेखन होगा। समस्या चिह्नांकन इसलिए बेहद ज़रूरी हो जाता है क्योंकि हम देखते हैं कि अनेक शिक्षक-शिक्षिका विविध सवालों-समस्याओं से अपनी कक्षाओं में जूझ रहे होते हैं और मानते हैं कि यह सिर्फ़ उनकी समस्या है। बहुधा वे यह धारणा बना लेते हैं कि एक शिक्षक के रूप में वे अपने विद्यार्थियों की मदद करने में नाकाम हैं या फिर विद्यार्थी ही में कोई कमी है जो वे समझ नहीं पा रहे हैं। जब ऐसे शिक्षक अपने अनुभव लेखन में किसी

समस्या को चिह्नित करके साझा करते हैं तो न सिर्फ़ वे अपनी कक्षा की किसी समस्या को स्कूली शिक्षा की एक व्यापक समस्या के रूप में दुनिया के समक्ष पेश करते हुए अपने जैसे अन्य शिक्षकों की आवाज़ बन रहे होते हैं, बल्कि वे समस्या को दुनिया के सामने पेश करके उसका समाधान भी आमंत्रित कर रहे होते हैं। हो सकता है कि उनकी समस्या किसी नए शोध या नवाचार की प्रेरणा बने। इस रूप में वे अपनी और अपने कक्षा के विद्यार्थियों के साथ-साथ समूचे शिक्षा जगत की भी मदद कर रहे होते हैं।

(4) **समस्या-समाधान** – कक्षा में किसी भी अवधारणा, जैसे, हम भागफल निकालने की कलन विधि की चर्चा कर रहे हैं, को सीखने-सिखाने के कई तरीक़े हो सकते हैं। अनेक शिक्षक अपने अनुभव, समझ और अपने विद्यार्थियों की सीखने-समझने की गति के हिसाब से अलग-अलग गतिविधियाँ करते हैं। अकसर ऐसा होता है कि एक शिक्षिका अपनी कक्षा में जो चर्चा करती है, जो सवाल पूछती है, जो गतिविधि करती है, वह किसी अन्य शिक्षक के लिए अनुकरणीय हो। कोई अन्य शिक्षिका अगर किसी समस्या से जूझ रही है, तो उसके लिए वह एक समाधानकारी उपाय हो। इसलिए किसी अवधारणा विशेष को कक्षा में प्रस्तुत करने, उसे सीखने-समझने में विद्यार्थियों की मदद करने के लिए यदि कोई शिक्षिका नवाचारी तरीक़ा अपनाती है और अपने कक्षा अनुभव को विस्तार से लिखकर वह दर्ज करती है तो यह अनुभव लेखन, समस्या-समाधान की श्रेणी में आ सकता है।

> शिक्षकों को अपने अनुभव लिखते रहना चाहिए और शिक्षक समुदाय के बीच साझा करते रहना चाहिए। बेहतर होगा कि यह लेखन शिक्षक अपनी मातृभाषा या प्रादेशिक भाषा— जो प्रदेश में शिक्षा का माध्यम हो— में करें। इसके ज़रिए वे अपने कार्य का जुड़ाव शिक्षा सिद्धान्तों से करने में स्वयं की और साथी शिक्षकों की मदद करेंगे!

जैसे भागफल निकालने के तरीक़े की ही बात ली जाए तो मान लीजिए कि वह यह दर्ज करती है कि भागफल निकालने की कलन विधि तक विद्यार्थियों को पहुँचने में मदद करने के क्या-क्या चरण हो सकते हैं? पहले हम विद्यार्थियों को किन्हीं वस्तुओं को किन्हीं समूहों में बराबर-बराबर बाँटने के लिए कह सकते हैं। बाँटने की इस क्रिया को विद्यार्थी मौखिक या लिखित रूप में बार-बार घटाकर, बार-बार जोड़कर, बार-बार गुणा करके भी कर सकते हैं। यह भागफल निकालने की मौखिक या ग़ैर-कलन विधि हो सकती है। इसके बाद चरणबद्ध रूप से शिक्षिका कलन विधि तक आती है। तो, भागफल कलन विधि सिखाने का यह एक मॉडल हो सकता है, एक उदाहरण हो सकता है, एक नवाचारी पद्धति हो सकती है जो कि अन्य शिक्षकों को अपनी कक्षा में मदद कर सकती है।

अन्त में हम यह कह सकते हैं कि शिक्षकों को अपने अनुभव लिखते रहना चाहिए और शिक्षक समुदाय के बीच साझा करते रहना चाहिए। बेहतर होगा कि यह लेखन शिक्षक अपनी मातृभाषा या प्रादेशिक भाषा— जो प्रदेश में शिक्षा का माध्यम हो— में करें। इसके ज़रिए वे अपने कार्य का जुड़ाव शिक्षा सिद्धान्तों से करने में स्वयं की और साथी शिक्षकों की मदद करेंगे; अपने कार्य और उसके अर्थ और बोध का निर्माण करते हुए स्वयं की क्षमताओं-दक्षताओं का विकास करेंगे और शिक्षा जगत की एक बड़ी कमी को पूरा करेंगे जो आमतौर पर सभी महसूस करते हैं। निजी डायरी लेखन इसकी एक अच्छी शुरुआत हो सकती है।

अमित कोहली घुमक्कड़ी करने और पढ़ने के शौकीन हैं। तक़रीबन 15 साल एकलव्य फ़ाउण्डेशन के साथ विविध स्तरों पर काम किया है। शिक्षा के इतिहास, डिस्कूलिंग एवं वैकल्पिक शिक्षा में विशेष रुचि है। अमित स्वयं को वैचारिक रूप से गाँधीजी के क़रीब पाते हैं।
सम्पर्क : amt1205@gmail.com